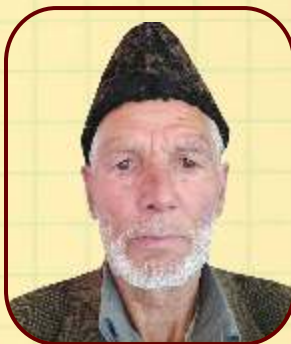


Padma Shri

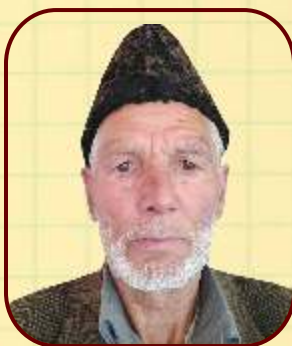


SHRI AKHONE ASGAR ALI “BASHARAT”

Shri Akhone Asgar Ali ‘Basharat’ is a renowned Literary expert and Poet in Balti Language. Balti language is spoken in Ladakh in India and widely spoken in Gilgit Baltistan under occupation of Pakistan. He has been continuously working to revive and popularize Balti language and culture.

2. Born on 3rd July, 1957 in a small village namely Karkitchoo in district Kargil of Union Territory Ladakh, Shri Basharat did not receive any formal education as no educational institution was available in his native village. His basic education was in Arabic and Persian under the tutorship of his late father who was a teacher of Islamic seminary in Kargil. He later joined the only Islamic Seminary in Kargil Madrasa Ithna Asharia, Kargil for six years.
3. Shri Basharat initiated his endeavor to promote Balti language through All India Radio Kargil in 1999 as a literary resource person on Balti language and regularly presented feature programs. His contributions on Balti language to Cultural Academy Kargil, Cultural Academy Leh, Doordarshan, Leh and Doordarshan, Srinagar are innumerable.
4. Shri Basharat compiled three books on Balti Ode, Elegy and Glory in 2001 and later in 2002 published his first poetry collection in Balti language titled "Guldastae Basharat" which got wide acclaimed among Balti speaking population both in India and across the border. He also published a book on religious prose. The second poetry collection in Balti language was published in 2011 titled "Bazme Basharat". In 2015, he chaired the Board of Studies for compiling text books on Balti language by Jammu and Kashmir Board of School Education, Srinagar.
5. Shri Basharat is a regular writer in Urdu language for a number of weekly and fortnightly publications. He is a farmer by profession and also as-president of Fruit Growers Cooperative Marketing & Processing Society, Kargil contributes in promoting apricot farming in Kargil.

पद्म श्री



श्री अखोन असगर अली "बशारत"

श्री अखोन असगर अली 'बशारत' बाल्टी भाषा के प्रसिद्ध साहित्य विशेषज्ञ और कवि हैं। बाल्टी भाषा भारत के लद्दाख क्षेत्र में बोली जाती है और पाकिस्तान के कब्जे वाले गिलगित बाल्टिस्तान में भी यह व्यापक रूप से बोली जाती है। वह बाल्टी भाषा और संस्कृति को पुनर्जीवित करने और इसे लोकप्रिय बनाने के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं।

2. 3 जुलाई, 1957 को संघ राज्य क्षेत्र लद्दाख के कारगिल जिले के करकिचू नामक एक छोटे से गांव में जन्में, श्री बशारत ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की क्योंकि उनके पैतृक गांव में कोई शिक्षा संस्थान नहीं था। उनकी मूल शिक्षा अरबी और फारसी में उनके दिवंगत पिता के मार्गदर्शन में हुई थी। उनके पिता कारगिल में इस्लामी मदरसा में शिक्षक थे। बाद में वह छह वर्ष के लिए कारगिल के इथना अशरिया के एकमात्र इस्लामी मदरसे में शामिल हो गए।

3. श्री बशारत ने बाल्टी भाषा साहित्यकार के तौर पर 1999 में आकाशवाणी कारगिल के माध्यम से बाल्टी भाषा को बढ़ावा देने के प्रयास किए और नियमित रूप से फीचर कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सांस्कृतिक अकादमी कारगिल, सांस्कृतिक अकादमी लेह, दूरदर्शन लेह और दूरदर्शन श्रीनगर में बाल्टी भाषा में उनका भरपूर योगदान है।

4. श्री बशारत ने 2001 में बाल्टी ओड, एलिजी और ग्लोरी पर तीन पुस्तकों का संकलन किया और बाद में 2002 में "गुलदस्ते बशारत" शीर्षक से बाल्टी भाषा में अपना पहला कविता संग्रह प्रकाशित किया, जिसे भारत और सीमा पार दोनों की बाल्टी भाषी आबादी के बीच व्यापक रूप से सराहा गया। उन्होंने धार्मिक गद्य पर एक पुस्तक भी प्रकाशित की। बाल्टी भाषा में उनका दूसरा कविता संग्रह 2011 में "बज़्मे बशारत" शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। 2015 में, उन्होंने जम्मू और कश्मीर बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन, श्रीनगर द्वारा बाल्टी भाषा की पाठ्य पुस्तकों का संकलन करने वाले अध्ययन बोर्ड की अध्यक्षता की।

5. श्री बशारत कई साप्ताहिक और पाक्षिक प्रकाशनों के लिए उर्दू भाषा के नियमित लेखक हैं। वह पेशे से किसान हैं और फल उत्पादक सहकारी विपणन और प्रसंस्करण सोसायटी, कारगिल के अध्यक्ष भी हैं जो कारगिल में खुबानी की खेती को बढ़ावा देने में योगदान देती है।